INTERNATIONAL JOURNAL OF DEVELOPMENT IN SOCIAL SCIENCE AND HUMANITIES

e-ISSN:2455-5142; p-ISSN: 2455-7730

The Conflict of Modernity and Tradition Expressed in Sharad Joshi's Literature

Dr Mahesh Chandra Chaudhary
Associate Professor, Department of Hindi, Narayan College, Shikohabad

Paper Received: 27th February, 2021; **Paper Accepted:** 04th May, 2021;
Paper Published: 23rd May, 2021

How to cite the article:

Dr Mahesh Chandra Chaudhary, The Conflict of Modernity and Tradition Expressed in Sharad Joshi's Literature, IJDSSH, January-June 2021, Vol 11, 112-117

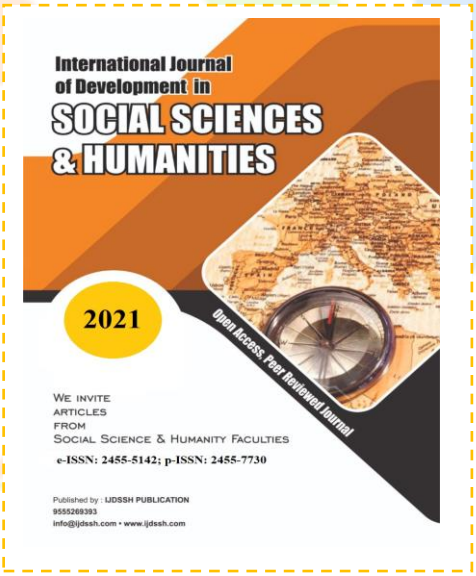

शरद जोशी के साहित्य में अभिव्यक्त आधुनिकता और परम्परा का द्वन्द्व

डॉ महेश चन्द्र चौधरी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

नारायण कॉलेज,शिकोहाबाद

आज का प्राणी प्राचीन अंधविश्वास, रूढ़वादिता, मिथ्या–आडम्बर इन सभी से छुटकारा पाना चाहता है और आधुनिक विचारों से युक्त उन्मुक्त जीवन जीना चाहता है, परन्तु प्राचीन संस्कारों की जड़ें अभी भी इतनी गहरी हैं कि चाहते हुए भी वह उन्हें पूर्णतः त्याग नहीं पाता। इस प्रकार उसका जीवन नवीन और प्राचीन के संघर्ष में उलझ कर रह गया है। चाहते हुए भी वह प्राचीन का पूर्णतः परित्याग और नवीन को अंगीकार नहीं कर पाता। नवीन के मार्ग में कभी–कभी किसी परिस्थितिवश ही सही, प्राचीनता आ ही जाती है। यह सब इसकी अधकचरी मानसिकता के कारण है। दो नावों में पैर रखकर कभी गन्तव्य तक नहीं पहुँचा जा सकता। ठीक उसी प्रकार परस्पर दो विरोधी और विपरीत विचारधाराओं को आधा–आधा स्वीकार कर जीवन में लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

किसी समय भारतवासियों का मूलमन्त्र था – 'सादा जीवन उच्च विचार' परन्तु आज जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण पूर्णतः परिवर्तित हो गया है। प्राचीन समय में जीवन के प्रति जो गम्भीरता दिखायी देती थी, वह भी पूर्णतः समाप्त हो गयी है। आज का व्यक्ति वास्तविकता और सच्चाई के स्थान पर अनेकानेक मिथ्या और कोरे आडम्बरों से युक्त होकर जीवन जीने में अपनी शान समझता है। आज के व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन दिखावे मात्र का रह गया है।

स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् देश की तेजी से बदलती हुई राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक जीवन की स्थितियों, परिस्थितियों तथा उनसे जन्म लेने वाली अनेकानेक विसंगतियों ने साहित्यकारों की चेतना को अन्दर से झकझोरा और उनके मस्तिष्क में एक प्रकार के आक्रोश को जन्म दिया। विसंगतियों की प्रतिक्रिया स्वरूप जन्में इसी आक्रोश ने हिन्दी–साहित्य की प्रत्येक विधा को व्यक्तिमय बनाने के लिए विवश कर दिया। अन्दर से चोट खाया हुआ व्यक्ति जब भी बोलेगा, व्यंग्य ही बोलेगा। उसकी लेखनी, जब भी लिखेगी व्यंग्य ही लिखेगी। यही

कारण है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी साहित्य की प्रत्येक दिशाओं में व्यंग्य की प्रधानता देखने को मिलती है।

आजादी के बाद परिस्थितियों की विषमता ने उन सभी आदर्शों, जीवन–मूल्यों और मान्यताओं को बुरी तरह झिझोड दिया, जो भारतीय जन–जीवन के साथ सदियों से चिपके हुए थे। साम्प्रदायिक दंगों, बलात्कार और आगजनी की घटनाओं और हत्याओं से आतंकित नई पीढ़ी के सामने एक बार तो सभी दिशाऐं बन्द हो गयीं। स्वतन्त्रता के उपरान्त राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मोर्चो पर होने वाली पराजयों ने भी कम हताश नहीं किया। संशय और अनिश्चय में झूलते परिवेश ने सजग साहित्यकारों– विशेषतः युवा साहित्यकारों को एक सर्वथा नवीन भाव–बोध प्रदान किया।[1]

यही नवीन भाव–बोध स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की प्रधानता का प्रमुख कारण है। समाज और व्यक्ति, आदर्श और यथार्थ, व्यक्ति स्वातन्त्र्य, जन–हित के बीच गहरा द्वन्द्व छिड़ गया है और मनुष्य इस संघर्ष से छुटकारा पाने के लिए जिन सीधी राहों की खोज कर रहा है, वे राहें उसके पाप की जंजीर बनती जा रही है। तब वह बाहर न देखकर भीतर देखता है। वह खोखले आदमी के भीतर झांकता है, क्योंकि वह महसूस करता है कि उसके खोखलेपन को स्वीकार किये बिना मुक्ति नहीं है। यह बोध उसे व्यंग्यशील बना देता है। इस कारण ने साहित्य की प्रत्येक विधा को व्यंग्यमय बनने के लिए विवश कर दिया है।[2]

आचार–विचार और रहन–सहन सभ्यता और संस्कृति की व्यापक परिधि में समाहित होते हैं। प्रत्येक संस्कृति के आचार–विचार और रहन–सहन के नियम अपने होते हैं, जो दूसरी संस्कृति से पृथक अस्तित्व रखते हैं। भारतीय समाज में विदेशीपन की अनुकरण की विकृत स्थिति, पाश्चात्य प्रभाव आदि पर शरद जोशी ने यथार्थ रूप से प्रकाश डाला है। आज की नयी पीढ़ी की असन्तुष्टि का प्रभाव उसके रहन–सहन से अभिव्यक्त होता है।

स्वतन्त्रता से पूर्व भारतवासियों के जीवन के कुछ सिद्धान्त थे, आदर्श थे। मान–मर्यादा और कर्तव्य भावना थी, उनके अन्दर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' विश्बन्धुत्व, सर्वेभवन्तु सुखिनः और परदुःख– कातरता जैसे महान् और उच्च भाव विद्यमान थे, परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् से तो यह सभी पूर्णतः नष्ट होते चले गये। व्यक्ति अधिक से अधिक स्वार्थी और आत्मनिष्ठ होता चला गया। उसके जीवन जीने, सोचने–विचारने के तौर तरीके पूर्णतः परिविर्तित हो गये। इन परिवर्तित जीवन–मूल्यों और उनके परिणामस्वरूप बिगड़ती स्थितियों के साथ विकृत होती संस्कृति को लक्ष्य कर जोशी जी ने अनेकशः व्यंग्य किया है। आज की विकृत संस्कृति के परिवेश का यथार्थ–चित्रण शरद जोशी ने अपने वृतान्त 'मुद्रिका रहस्य' में किया है। भारतीय

संस्कृति और परिवर्तित जीवन मूल्यों में घुटन की जिन्दगी जीने वाली युवा पीढ़ी के बीच संघर्ष निरन्तर बढ़ रहा है। विडम्बना यह है कि प्राचीन संस्कृति इन्हें असह्य है और नयी पीढ़ी ये बना नहीं पा रहे हैं। युवा पीढ़ी एक विचित्र सी कशमकश के दौर से गुजर रही है। आज की युवा पीढ़ी का सूखा–सूखा– चेहरा, बड़ी हुई दाढ़ी, बाल, चायघर या काफी हाउसों में अड्डेबाजी करने वाला तथाकथित बौद्धिक वर्ग संत्रस्त है, कुण्ठाग्रस्त है। घुटते दम को बचाने के लिए उसने तरह–तरह के नशे करना शुरू कर दिया है जिससे उनकी घुटन और भी अधिक बढ़ गयी है।

आप दूसरी तरह से यह सोचिए कि नयी पीढ़ी क्यों असन्तुष्ट है ? वह क्यों गैर–जिम्मेदार है? कारण यह है कि उनमें क्षमता है, साहस नहीं है। ''क्षमता है और विश्वास है कि राज्य के मुख्यमंत्री बनकर काम कर सकेंगे, पर उसे प्राप्त करने की जो ताकत होती है, जो अन्दर से आती है या कुछ समाज से मिलती है वह नहीं है। ऐसी परिस्थिति में उस व्यक्तित्व में खीझ प्रकट होती है और भीड़ में घूमते समय अपना अस्तित्व प्रकट करने के लिए कुछ नयी चीजें सामने लाता है, जैसे बाल बढ़ाना, जूते की नोक लम्बी करना, रंगीन कपड़े पहनना और अपना अस्तित्व प्रकट करना कि मुझे देखो, मैं हूँ।''[3]

आज के युवक को अपने देश एवं परिवार से प्रेम नहीं रहा वे आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने एवं विदेशी चकाचौंध से आकर्षित होकर अपने देश से पलायन कर जाते हैं। माता–पिता अपने प्रेम की दुहाई देते रह जाते हैं। श्री शरद जोशी विदेशी–यात्रा के लिए आतुर और आतुर ही नहीं पागलपन की हद तक दीवाने, भारतीय नागरिकों की स्थिति का चित्रण करते हुए लिखते हैं –''भारतीय मानुस उस दिव्य–क्षण के लिए क्या नहीं करने को तैयार है। तुम मुझे विदेश दो, मैं तुम्हें देश दूँगा। एक यात्रा के लिए वह अपनी भूमि, अपना घर बेच देगा, स्वर्ग को पाने का आतुर अभिलाषी जैसे धरती के माया–मोह, सुख–दुख से ऊपर उठ जाता है, उसी भाँति विदेश–यात्राकांक्षी भारतीय अपने देश के लिए तटस्थता अपना लेगा। अपने विदेश को सुदृढ़ करने के लिए वे देश को निश्चित ही बेच देना पसंद करते हैं।''[4]

आधुनिकता के नाम पर तथ्यहीन, कथ्यहीन एवं आधारहीन ग्रंथों की बाढ़ भी व्यंग्यकारों की आलोचना का विषय बनी है। पुस्तक के बाह्य कलेवर के आकर्षण व रूप सज्जा तथा मनभावन शीर्षक के द्वारा पाठकों को छलने की वृत्ति पर प्रहार करते हुए शरद जोशी लिखते हैं –''हिन्दी में ऐसी खतरनाक पुस्तकों की कमी नहीं जिसके विषय में यह मशहूर है कि उन्हें एक बार आरम्भ करने पर बिना समाप्त किये आप छोड़ नहीं सकते। हिन्दी–पाठक, जो चुनौतियों का मुकाबला करना जानता है, ऐसी पुस्तकें अवश्य खरीदता है और उन्हें अधूरी फेंक स्वयं को विजयी महसूस करता है।''[5]

वास्तव में आज की भारतीय संस्कृति विकृतियों एवं विसंगतियों से युक्त है। प्राचीन और नवीन सांस्कृतिक स्थितियाँ एक विचित्र–सी कशमकश की स्थिति पैदा करती हैं। न तो पुराने आचार–विचार संस्कार, अंधविश्वास आदि हट पा रहे हैं, न ही नवीन का पूरी तरह निर्माण ही हो पा रहा है।

जोशी जी ने समकालीन जीवन के धार्मिक यथार्थ से साक्षात्कार करते हुए उसके पाखण्डों को प्रखरता से उद्घाटित किया है। सांस्कृतिक जीवन में भी स्वतन्त्रता के पश्चात् अनेक प्रकार की विसंगतियाँ जन्मी हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र में पुरातन और आधुनिक पीढ़ी का परस्पर संघर्ष स्वतन्त्र भारत की सबसे बड़ी विडम्बना है। वर्तमान भारतीय समाज में एक तरफ भारत की पुरानी रीति, प्राचीन परमपराओं, आस्थाओं, विश्वासों और मूल्यों का अनुपालन करने वाले लोग है, यद्यपि उनकी संख्या उत्तरोत्तर कम होती जा रही है, दूसरी तरफ पुरातनता से पूरी तरह अपना पल्लू छुड़ाकर आधुनिक शिक्षा और पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते हुए प्रभाव से प्रभावित युवा–पीढ़ी है, जिसने पुरातनता का हर स्थिति में विरोध करना अपने जीवन का मूल–ध्येय मान रखा है। अन्धे होकर पश्चिमी रंग–ढंग से पीछे दौड़ना इस पीढ़ी का धर्म है। पुरातन भारतीय संस्कृति और उसकी मान्यताओं में इसे वासीपन की बदबू आती है। पुरानी मान्यताओं में विश्वास करने वाले अपने पुरातनता के मोह को त्यागने के लिए तैयार नहीं है और आधुनिकता के मोह में डूबी वर्तमान पीढ़ी पुरातनता को किसी भी स्थिति में स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है। परिणाम सामने है, पुरातन और आधुनिक के बीच संघर्ष।

जोशी जी ने आधुनिकता के नाम पर बढ़ती हुई फैशनपरस्ती, दिखावा, फैशन के नाम पर बढ़ती हुई नग्नता, बदलती हुई और खोखली मान्यताओं, नैतिक और आदर्शवादी मूल्यों का पराभव– इन सब स्थितियों ने सांस्कृतिक जीवन में बहुविधि विसंगतियों की अभिव्यक्ति अपने साहित्य में की। उन्होंने बताया कि संस्कृति के बाजारीकरण और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण से समाज में खतरे ही खतरे बड़े हैं।

शरद जोशी नहीं रहे, व्यंग्य का एक बहुत बड़ा मजबूत स्तम्भ टूट गया। उन्होंने व्यंग्य लेखन का कार्य एक व्रत की तरह निभाया। हिन्दी व्यंग्य को समृद्ध करने में उनके योगदान को नहीं भुलाया जा सकता। शरद जी मनुष्य की चिंता के लेखक थे, उनकी वास्तविक चिंता थी, मनुष्य की हर प्रकार के अन्याय से मुक्ति। उनके लेखन की यही सार्थकता और प्रासंगिता है कि वे पाठक को समस्याओं से टकराने एवं जूझने का साहस एवं संकल्प प्रदान करते हैं और अन्त में, श्रद्धांजलि रूप में उन्हीं के दो दृष्टान्त –''सिद्धान्तवादी मूर्ख की स्थिति उस वानर के समान है, जिसके हाथों में उस्तरा है। दूसरा सिद्धान्तहीन व्यवहारवादी है, जो पल–पल दलबदलता है। ;चुनाव गीतिकाः सरलार्थद्ध तथा ''धिक्कार है, हम दिशा जानने के लिए भी यान्त्रिकता के

गुलाम हो गए। दिशाएँ, जो चिरकाल से अटल हैं और सदा रहेंगी, परन्तु हम उन्हें भूल गये।हम सब कुछ भूल गये।'' ;एक शंख बिन कुतुबनुमाद्ध, किमधिकम् !!

सन्दर्भ सूची

1. *जोशी, शरद : प्रतिदिन–1, पृ0 334*
2. *जोशी, शरद : दूसरी सतह, पृ076*
3. *जोशी, शरद : प्रतिदिन–1, पृ0 194–195*
4. *जोशी, शरद : यत्र–तत्र–सर्वत्र, पृ0 225*
5. *जोशी, शरद : यथासंभव, पृ0 167*

REFERENCES

1. Joshi, Sharad: Pratidin-1, pg 334
2. Joshi, Sharad: Doosri Satah, pg 76
3. Joshi, Sharad: Pratidin-1, pg 194-195
4. Joshi, Sharad: Yatr-Tatr-Sarvatr, pg 225
5. Joshi, Sharad: Yathasambhav, pg 167

I
J
D
S
S
H